कालीन के विकास में मुग़ल शासकों की भूमिका (भारतीय नॉटेड कालीन के सन्दर्भ में)

राकेश कुमार (शोध छात्र) टैक्सटाइल डिजाइन प्रभाग, चित्रकला विभाग, दृश्य कला संकाय, बी0एच0यू0 वाराणसी ।

सार

भारत में, कालीन बुनाई की कला को स्थापित करने का श्रेय मुग़ल शासकों को जाता है, बाबर द्वारा स्थापित मुगलवंश के सुदृढ़ीकरण से पहले नॉटेड कालीन एक कलात्मक शैली और उपयोगितावादी वस्तु के रूप में अज्ञात था, शायद इसलिए कि इस क्षेत्र की गर्म जलवायु को ठंडी जमीन से सुरक्षा की आवश्यकता नहीं होती थी, इसलिए भारतीय कालीन एक सहज, सदियों पुरानी परम्परा के परिणामस्वरूप नहीं बल्कि राजवंशों के शाही इच्छा शक्ति के कारण आज अस्तित्व में है । नॉटेड कालीन शुरु से ही भारत में एक विलासिता की वस्तु थी जिसका मुख्य उद्देश्य मुग़ल दरबार और महलों को सजाना था । मुग़ल भारत से पहले नॉटेड कालीनों का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है लेकिन जो प्राप्त होता है वह दरी है, दरी साधारण बुनाई तकनीक द्वारा तैयार किया जाता था जो अलंकरण की तुलना में नॉटेड कालीन से काफी साधारण होते थे ।

भारतीय नॉटेड कालीन के विकास में मुग़ल शासको का योगदान जिसमें मुख्य रूप से हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के महत्वपूर्ण कालक्रम का अध्ययन किया गया है जो विशेष रूप से नॉटेड कालीन बुनाई पर आधारित है, इसके साथ ही साथ समयानुसार मुग़ल शासकों के बदलते शासन का प्रभाव नॉटेड कालीनों में भी दिखाई देते है, जिसमें नॉटेड कालीनों के बदलते अलंकरणों में विदेशी प्रभाव (खासकर फारसी अलंकरण के रूप में) के साथ-साथ भारतीय कला तत्वों के समावेश का अध्ययन, बुनाई तकनीक एवं कालीन में प्रयोग किये जाने वाले रेशों का अध्ययन किया गया है जिसे इस लघु शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है ।

शब्द कुंजी- परिचय, नॉटेड कालीन की उत्पत्ति, भारतीय कालीन, फ़ारसी अलंकरण, भारतीय अलंकरण, बुनाई तकनीक ।

परिचय

भारत में नॉटेड कालीनों का लिखित इतिहास मुगल काल से प्राप्त होता है, इसके पहले प्राचीन भारत में नॉटेड कालीनों का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है, अगर फर्श कवरिंग की बात की जाये तो कालीन किसी न किसी रूप में फर्श (जमीन) पर बिछाने के लिए प्रयोग किया जाता रहा होगा जिसमें से एक रूप दरी हो सकता है, इस प्रकार यह माना जा सकता है कि भारत में, प्राचीन समय से दरी की बुनाई की जाती थी । मुगलों के भारत आने के बाद दरी की जगह कालीनों ने ले लिया, जिसका स्वरूप आज हम देख पा रहे है ।

कालीन की उत्पत्ति

कालीन बनाने की कला सम्भवतः कई हजार साल पहले मध्य एशिया के मैदानी इलाको में, खानाबदोश जनजातियों द्वारा विकसित हुयी । पूर्व में तुर्कमान से लेकर फारस और उत्तर-पश्चिम में काकेशस क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी, बुनाई की कई कला विधाओं में माहिर थे, ऐसा माना जाता है कि खानाबदोश जनजातीय के लोग सर्दियों के मौसम में, ठण्ड से बचने के लिए हाथ द्वारा नॉट लगाकर की गई बुनाई से तैयार एक प्रकार के मोटे कपड़े का प्रयोग करते थे इसके आलावा ऐसे कपड़े का प्रयोग वह लोग घर बनाने के लिए तम्बू के रूप में भी करते थे ।

कालीनों की बुनाई के लिए ऊन, उनके द्वारा पाले गए भेड़-बकरियों से प्राप्त किये जाते थे जो उन जनजातियों का मुख्य व्यवसाय था । कालीन की बुनाई करने के लिए बांस की लकड़ियों

आकृति 1, स्रोत-https://letsgopersian.com/blog/luristan-carpet-weaving/

के बने करघे का प्रयोग करते थे जो सरलतम रूप से दो लकड़ियों के बने होते थे । बुनाई करने के लिए करघों को जमीन पर क्षैतिज रूप में सेट किया जाता था । यह करघे उनके लिए काफी आरामदायक होते थे क्योंकि खानाबदोश एक घुमंतू जनजाति होती थी, जिनका कोई स्थाई घर नहीं होता था, ये जनजातियाँ अपने रहने के पसंद से अलग-अलग इलाकों का चुनाव करती थी और कुछ दिनों बाद दूसरे इलाके को पलायन कर जाती थी, इस प्रकार लकड़ी से बने करघों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में कोई समस्या नहीं होती थी ।

भारतीय कालीन

भारतीय संस्कृति के साक्ष्य के रूप में कालीन बुनाई की कला 1526 में शुरु हुआ माना जाता है, जब देश में मुग़ल वंश का आधिपत्य था । मुगलवंश की स्थापना बाबर ने की थी जो तैमूर और चंगेज़ खान का वंशज था । हस्तनिर्मित शिल्पों और उनकी सुंदरता के प्रति बाबर का काफी लगाव था, इनके माध्यम से ही कालीन बुनाई की कला भारत में स्थापित हुई । यह कलाकारों का बहुत सम्मान करते थे एवं उनकी कलाओं को प्रोत्साहित करना व उनकी प्रतिभा से लाभान्वित होते थे । भारत में नॉटेड कालीन के विकास में मुग़ल वंश के विभिन्न शासकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके फलस्वरूप कालीन बुनाई की कला भारत में विकसित हो पायी ।

हुमायूँ

1544 के समय एक विद्रोह के परिणामस्वरुप बाबर के बेटे, हुमायूँ को फारस के सफ़ाविद राजवंश के दरबार में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ नॉटेड कालीन बुनाई का काम पहले से हो रहा था । सफ़ाविद परिवार के मेहमान के रूप में रहने के साथ-साथ हुमायूँ वहां कालीनों की बुनाई से सम्बंधित कार्यशालाओं में भी अपना समय बिताया, कालीन बुनाई से सम्बंधित रहस्यों को जानने में उसने काफी दिलचस्पी भी दिखायी, यह पहली बार फ़ारसी दरबारी कारीगरों के शिल्पकला से परिचित हुए थे और इतने प्रभावित हुए कि कुछ समय बाद जब उसने भारत की ओर वापस प्रस्थान किया तो उसने सफ़ाविद राजवंश की अनुमति से, उनके दरबार से कई मास्टर कालीन बुनकरों एवं डिजाइनरों को भी अपने साथ लाया जिनकी वजह से भारत में कई महत्वपूर्ण कार्यशालाओं की शुरुआत की गयी ।

अकबर

हुमायूँ का पुत्र अकबर (1556-1605) एक महान मुग़ल सम्राट था, राजनितिक रूप से उदार विचार वाले अकबर ने देश को हथियारों के बल पर एकजुट करने की बजाय, कूटनीति के मानविय तरीके को अपनाया । अकबर ने हिन्दू और मुस्लिम के बीच सभी भेदभाव को समाप्त कर दिया, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, रुचियाँ बहुत विकसित एवं परिष्कृत और उनके पास एक सृजनात्मकता थी जो हमेशा नए विचारों को ग्रहण करने वाली होती थी । अकबर पहले ऐसे मुग़ल सम्राट थे जिन्होंने अपने साम्राज्य में नई कला एवं संस्कृतियों को पेश करने में सक्रियता दिखाई, सत्ता में रहने के दौरान उन्होने कई राज्यों पर विजय प्राप्त किया जिसमे हारे हुए राजवंशों की अलग-अलग कला शैली व संस्कृतियों को अपने साम्राज्य की वर्तमान शैली में

मिश्रित करने का प्रयास किया । उन राज्यों के कारीगर एवं शिल्पकारों ने अपने ज्ञान को, वर्तमान साम्राज्य में विलय किया जिससे मुग़ल कला शैली और निखर कर सामने आयी ।

कालीन का लिखित इतिहास 16वीं शताब्दी से प्राप्त होता है, मुग़ल सम्राट अकबर फारस से कुछ कालीन बुनकरों को भारत लाये, उन बुनकरों की सहायता से, अपने शाही महल में कालीन बुनाई का काम शुरू करवाए, आगरा, लाहौर और दिल्ली में कालीन की कार्यशालाएं स्थापित करवाए, यहां शुरूआती बुनकर फ़ारसी मूल के थे इसलिए यह स्वाभाविक था कि कालीनों पर डिज़ाइन फ़ारसी शैली पर आधारित थे । इस समय बनाये गए कालीनों पर किरमान, कशान, इस्फ़हान व हेरात इत्यादि के अलंकरणों का प्रभाव मुख्य रूप से था, खासकर कश्मीर में जब कालीन कला की शुरुआत हुयी । शाही कार्यशाला में उत्पादित कालीनों के कई नमूने, पश्चिम के कई संग्रहालयों में संरक्षित हैं, उनमे से सबसे पुराना और प्रसिद्ध नमूना, 1634 में रॉबर्ट बेल द्वारा गर्डलर कंपनी, लन्दन को उपहार के रूप में दिया गया था, जब वह उस कंपनी का मालिक था । ये कालीन, बुनकरों द्वारा प्रदर्शित सुंदर कारीगरी की कहानी को दर्शाते है ।

फ़ारसी बुनकरों के सानिध्य में रहकर, भारतीय बुनकरों ने कालीन बुनाई कला को सीखा और जल्द ही इन उत्पादों को अपने पर्यावरण की जरूरतों की उपयुक्तता के अनुसार तैयार करना शुरू किया । धीरे-धीरे इस कला में विकाश होने लगा । भारत में कालीन बुनाई कला को बढ़ावा मिलने का कारण यह भी था कि फारसी कारीगरों का स्थानीय समुदायों के साथ जल्द ही घुल-मिल जाना, यहां बसना और उनके साथ विवाह करना, साथ ही साथ देश की परम्परा को आत्मसात करना इत्यादि प्रमुख कारण थे ।

कमला देवी चट्टोपाध्याय ने अपनी "पुस्तक कार्पेट्स एंड फ्लोर कवरिंग ऑफ़ इंडिया" में उल्लेख किया है कि हमारे पास शाही कारखानों के संगठित संचालन का कोई विवरण नहीं है फिर भी यह दिखाने के लिए पर्याप्त जानकारी है कि बुनकरों को सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ-साथ कुछ सुविधाएं और विशेषाधिकार भी प्राप्त थे । उन्हें संतुष्ट व खुश रखने के लिए हर संभव प्रयास किया जाता था । वेतन, भोजन और आवास के अलावा उन्हें स्थाई रूप से बसने के लिए जमीन भी दी जाती थी । जो लोग लम्बे समय से इस काम में लगे थे, किसी कारणवश (जैसे वृद्ध या बीमार हो जाने पर) यह काम करने में असमर्थ थे उन्हें पेंसन के साथ-साथ उनके बच्चों का देखभाल भी किया जाता था । उन्हें अपने मालिक के लिए केवल एक विशिष्ट निर्धारित समय के तहत ही काम करना था, बाकि समय उनका अपना था ।

अकबर ने बेहतरीन ऊन और रेशम के धागों से कालीन बुनने की कला की शुरुआत की, इस महान परम्परा को उसके उत्तराधिकारियों ने जारी रखा, अकबर के शासन काल के दौरान बेहतरीन व अच्छी गुणवत्ता के कालीन बुने जाने का दावा किया जाता है, । इस समय के कालीनों ने देश के साथ-साथ विदेशों में भी खूब प्रसिद्धि हासिल की । 16वीं से 18वीं शताब्दी तक मुग़ल शासक के दौरान, भारतीय सभ्यता पर फारस का गहरा प्रभाव रहा, आगरा, दिल्ली और लाहौर में इसके प्रमुख साक्ष्य मौजूद है, आगरा का ताजमहल निःसंदेह फ़ारसी प्रभाव से उत्पन्न इमारतों में सबसे बेहतरीन उदाहरण है ।

कालीन बनाना सिर्फ कार्यशालाओं तक ही सीमित नहीं था, अकबर ने जेलों में भी कालीन बुनाई का काम शुरू करवाया, इस प्रकार विभिन्न जेलों में बंद कैदियों ने भी ऐसे कालीनों का निर्माण किया जो कुशल कारीगरों को भी मात दे सकते थे । अकबर, विभिन्न प्रकार के अलग-अलग जेलों के बीच कालीन बुनाई की प्रतियोगिताएं भी आयोजित करवाते थे इससे न केवल कैदियों के सुधार का वांछित परिणाम सामने आया बल्कि कालीनों और उनकी कला शैलियों की लोकप्रियता भी बढ़ी ।

कालीन उद्योग का एक वर्णन आइन-ऐ-अकबरी से प्राप्त होता है कि अकबर के शासनकाल का प्रसिद्ध ऐतिहासिक रिकॉर्ड है जो उनके इतिहासकार अबुल फज़ल द्वारा लिखा गया है, “महामहिम ने शानदार किस्मों और आकर्षक बनावट वाले कालीन बनवाये है, उन्होंने अनुभवी कारीगरों को अपने कार्यशालाओं में न्युक्त किया जिन्होनें कई उत्कृष्ट कृतियां बनाई, कालीन इतने अच्छे है कि अब कोई ईरान और तुरान के कालीनों को याद नहीं करता है, सभी तरह के डिज़ाइन बनाने वाले कारीगर यहां बसे हुए है और एक समृद्ध व्यापार चलाते है, यह भारत के कई शहरों में, विशेषरूप से आगरा, फतेहपुर और लाहौर में बसे हुए है ।”

जहांगीर

अकबर के पुत्र और उत्तराधिकारी जहांगीर (1605-1627) भी कला प्रेमी व कला के संरक्षक थे । इन्होने अपने संस्मरणों में लिखा है कि “चित्रकला के प्रति मेरा प्रेम इतना अधिक है कि मै कलाकार का नाम, चाहे वह जीवित हो या मृत, उसके काम को देखकर बता सकता हूँ कि वह काम किस कलाकार का है ।” प्राकृतिक वातावरण ने जहांगीर को बहुत प्रभावित किया, इनके दरबार के दो प्रमुख कलाकार मंसूर और मुराद, सबसे सुन्दर, जानवर, पक्षियों और विशेष रूप से कश्मीर में उगने वाले विभिन्न प्रकार के फूलों के चित्रण के लिए प्रसिद्ध थे । जहांगीर के

आदेश पर मंसूर ने कश्मीर की घाटियों से, कम से कम सौ अलग-अलग प्रकार के फूलों को चित्रित किया ।

जहांगीर के शासनकाल के दौरान हर तरह के कलाकारों और उनके द्वारा बनाये गए उत्पादों (जिसमें कालीन भी शामिल था) को महत्व दिया जाता था, इनके समय में कालीनों का अधिक विकास हुआ । कालीन मुग़लों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा था, उन्होंने इसे न केवल बैठने के कक्षों की खूबसूरती बढ़ाने के लिए बल्कि आराम करने के लिए फर्श पर आकर्षक पैटर्न वाले कालीन का प्रयोग भी करते थे, महलों के अंदर कम ही ऐसी जगह होती थी जहाँ कालीन नहीं बिछे होते थे । यही कारण है कि वर्तमान समय में मुग़लों को विभिन्न प्रकार की विलासिता और कला से घिरे हुए, जटिल पैटर्न, चमकीले रंगों वाले, भव्य कालीनों पर खड़े या बैठे हुए चित्रित किया जाता है ।

शाहजहां

जहांगीर के उत्तराधिकारी शाहजहां महान मुग़लों में सबसे प्रिय और राजसी शासक था, अपने प्रजा के लिए उनका व्यवहार एक पिता की तरह था, जिस प्रकार से पिता का अपने पुत्र से होता है, प्रजा डरने की वजह उनको सम्मान दिया करते थे । फ्रांस्वा बर्नियर (एक फ़्रांसिसी, जो दरबार का चिकित्सक था), ने शाहजहां के दरबार का भव्य सुंदरता का वर्णन किया है “जब दरबार महान अवसरों पर भर जाता था, सम्राट दर्शक कक्ष के अंत में सिंहासन पर विराजमान थे, उन्होंने सोने के धागों के बने मुलायम कढ़ाई वाला एक सफेद साटन का शानदार अंगरखा पहने हुए थे, सोने की बुनाई की गयी पगड़ी (जिस पर बड़े-बड़े हीरे जड़े हुए) पहने थे, विशाल मोतियों की माला उनके नाभि तक लटक रही थी, उनका मयूर सिंहासन चार फीट ठोस सोने के ऊपर रखा हुआ था जिसमे पन्ना, माणिक और हीरे जड़े हुए थे, अंत में कमरे की हर सतह पर रेशमी कालीन बिछे हुए थे ।”

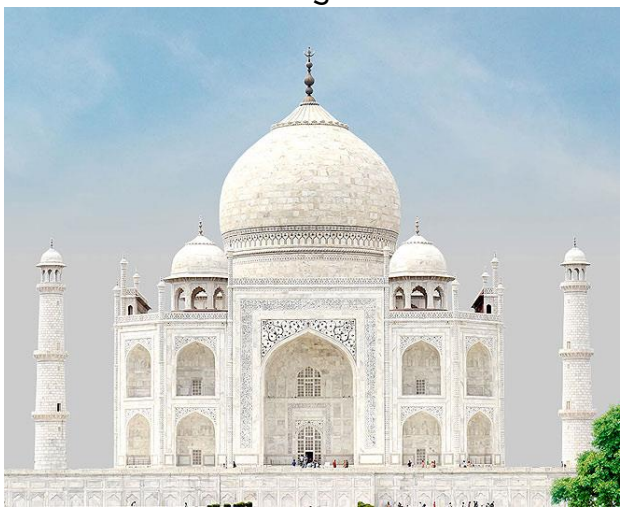

आकृति 2, ताजमहल

स्रोत- https://www.herzindagi.com/hindi/destination/monuments-of-india-as-beautiful-as-taj-mahal-in-agra-article- 154272

शाहजहां को जिस विलासिता के साथ अपने चारो ओर रहना पसंद था वह उससे प्रेरित इमारतों में भी झलकता है । दिल्ली में इनके द्वारा बनवाया गया शाही निवास, मनुष्य द्वारा कल्पित सर्वाधिक पवित्रतम रत्नों में से एक है । आगरा में बनवाया गया ताजमहल आज भी विश्व के आश्चर्यों में से एक माना जाता है । शाहजहां द्वारा स्थापित, व्यवस्थित और शांतिपूर्ण साम्राज्य को उसके ही उत्तराधिकारी, औरंगजेब ने नष्ट कर दिया । यह एक कट्टर मुस्लिम शासक था जिसने हिन्दू और मुस्लिम भाईचारे को ख़त्म कर दिया, हिन्दुओ को सताया एवं हिन्दू धर्म से सम्बंधित मंदिरों को नुकसान पहुंचाया ।

आकृति 3, फारसी अलंकरण एवं लेखन से सुसज्जित बाहरी द्वार, स्रोत-https://www.istockphoto.com/search/2/image-

आकृति 4, ताजमहल के अन्दर की गयी पच्चीकारी, भारतीय अलंकरण के साथ फारसी अलंकरण

अलंकरण

मुग़ल भारत के प्रारंभिक नॉटेड कालीनों में फारसी अलंकरणों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । शुरुआती भारतीय कालीन के उदाहरण 16वीं शताब्दी के अंत के और 17वीं शताब्दी के प्रारम्भ के प्राप्त होते है जिसमें वास्तविक और पौराणिक पशुओं के सर के साथ विचित्र आकृतियों को चित्रित किये गए दर्शाया गया, जिसे इंडो-इस्फ़हान या इंडो-पर्शियन कालीन कहा गया । यह सफ़ाविद अलंकरणों से भिन्न थे जिसमें ताड़ के पत्ते, हेराती अलंकरण और बादलों की विभिन्न प्रकार के पट्टियों का प्रयोग किया गया । इस प्रकार के अलंकरणों को पुरे पृष्टभूमि में व्यवस्थित किया जाता था, शुरुआत में इस तरह के पैटर्न को फारस या हेरात के रूप में माना गया, बाद में इन्हें उनके रंग संयोजन और सुलेखन संवेदनशीलता के आधार पर दो

समूहों में विभाजित किया गया । पहला सबसे गहरे पृष्टभूमि वाले कालीन, दूसरा लाख लाल रंग के पृष्टभूमि पर हल्के आउटलाइन या बिना आउटलाइन वाले डिज़ाइन को भारतीय और अन्य को फारसी स्वाद के अनुरूप कहे गए ।

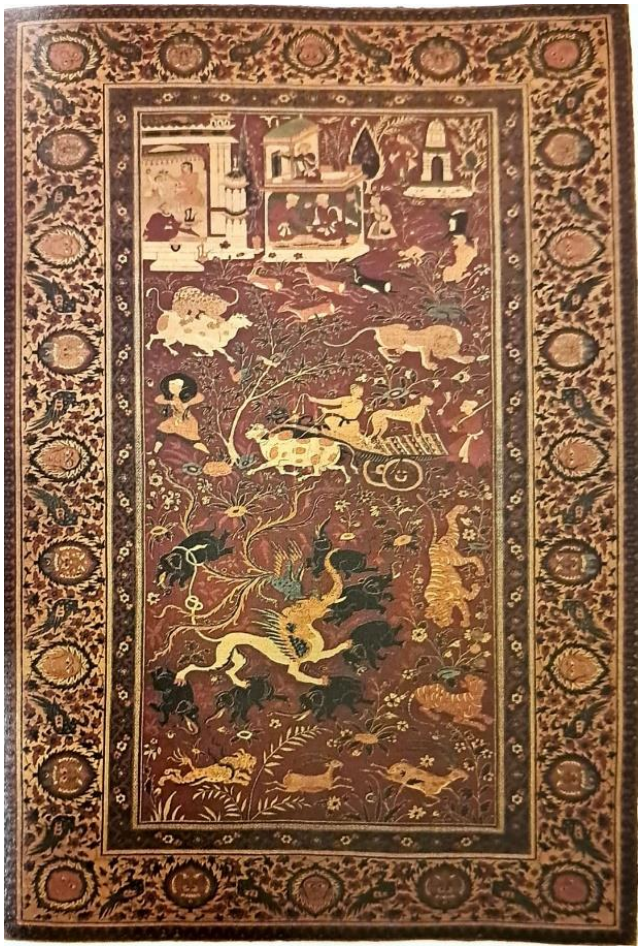

आकृति 5, आकृति पैटर्न वाला कालीन,17वीं सदी के शुरुआत मे, म्यूजियम ऑफ़ फाइन आर्ट्स, बोस्टन

आकृति 6, इंडो-इस्फ़हान या इंडो-पर्शियन कालीन, 17वीं सदी, भारत

17वीं शताब्दी के अंत में एवं 18वीं शताब्दी के दौरान फूल छोटे, घने और शैलीबद्ध हो गए, जिसमें मिलफ्लेर्स (हजार फूल), मेहराब के अंदरूनी हिस्से में बनाया गया जो हमेशा एक ही पौधे से निकला हुआ चित्रित किया गया है । इस प्रकार के अलंकरण खासकर प्रार्थना कालीनों में प्रायोग किये जाते थे । इनके आलावा प्रार्थना कालीनों में मुग़ल वास्तुकला से प्रभावित, मेहराब के अलंकरण का भी प्रयोग किया गया है ।

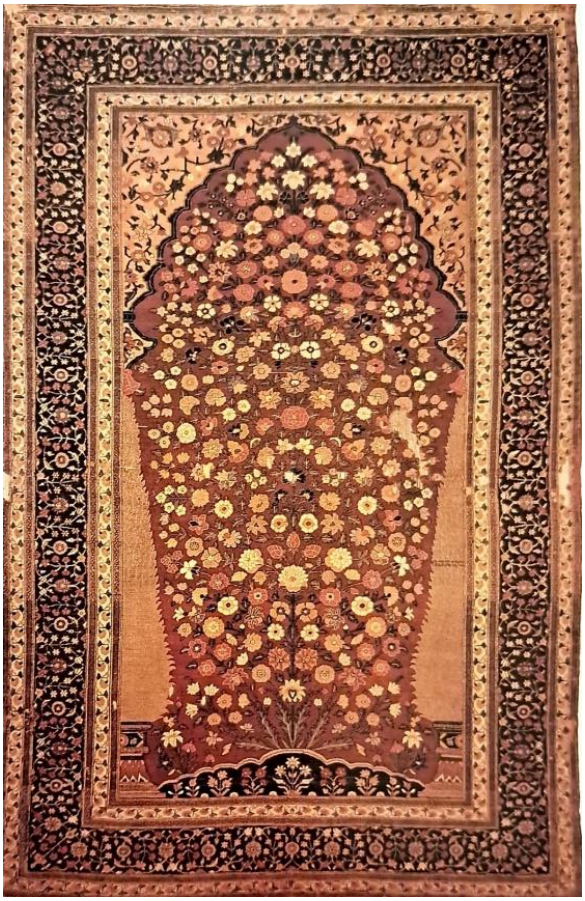

आकृति 7, प्रार्थना कालीन, 17वीं सदी के अंत में, आस्टररिचिस म्युज़ियम फॉर एन्ज़ेवेंट कुन्स्ट, वियना

आकृति 8, प्रार्थना कालीन, 17वीं सदी, मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ़ आर्ट, न्यूयॉर्क

भारतीय कालीनों के प्रकार

भारतीय कालीनों को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है जो निम्नलिखित प्रकार से है-

i) रेशों पर आधारित कालीन
ii) तकनीकों पर आधारित कालीन
iii) अलंकरण पर आधारित कालीन

रेशों पर आधारित कालीन

भारतीय पारम्परिक कालीनों को मुख्य रूप से ऊन, रेशम, कपास के धागों का इस्तेमाल करके बनाया जाता था लेकिन आधुनिक समय में तरह-तरह के रेशों का प्रयोग किया जा रहा है जिसमे प्रकृति निर्मित रेशों के साथ-साथ मानव निर्मित रेशों का प्रयोग करके कालीनों के निर्माण किया जा रहा है, जिसमें रेशम कालीन, ऊनी कालीन, ऊनी-रेशमी कालीन, पॉलिएस्टर

विस्कोस कालीन, जूट कालीन, पॉलीप्रोपिलीन कालीन, नायलॉन कालीन, ऐक्रेलिक कालीन, अन्य फाइबर कालीन इत्यादि ।

तकनीकों पर आधारित कालीन

तकनीकों के आधार पर पारम्परिक कालीन को तीन अलग-अलग विधि द्वारा बनाये जाते थे जिसमे हाथों द्वारा गाँठ लगाकर (Hand-knotted), हाथों से टफ्ट करके (Hand-tufted) इसके आलावा बुनाई (Weaving) करके अलग-अलग तरह के कालीनों में गुच्छेदार कालीन (Cut-pile and Loop-pile), दरी, इत्यादि का निर्माण किया जाता है । वर्तमान समय में कालीन बनाने की कई विधियां प्रचलित है जिनका प्रयोग करके विभिन्न प्रकार के सस्ते व महंगे कालीन बनाये जा रहे हैं ।

अलंकरण पर आधारित कालीन

मुग़ल भारत में कालीनों के अलंकरणों को फारसी रुपांकनों को बनाया गया जो विभिन्न नामों से भारत में प्रचलित हुए-

i) इण्डो-कशान कालीन
ii) इण्डो- काश्मार कालीन
iii) कश्मीर कालीन
iv) इण्डो- किरमान कालीन
v) महल कालीन
vi) इण्डो- मीर कालीन
vii) इण्डो- तिब्बती कालीन
viii) इण्डो- नैन कालीन
ix) इण्डो- औशाक कालीन
x) इण्डो- पर्शियन कालीन
xi) इण्डो- सराघ कालीन
xii) इण्डो- सेवोनरी कालीन
xiii) इण्डो- सेरापी कालीन
xiv) इण्डो- तबरेज़ कालीन
xv) इण्डो- टर्किश कालीन
xvi) आदिवासी कालीन इत्यादि

निष्कर्ष

आज के समय में हम जो कालीन, बड़ी सरलता से उसको जमीन पर बिछाने के नजरिये से देखते है उनका भी एक समृद्ध इतिहास रहा है । कालीन कला जो एक फ़ारसी उत्पाद था, को भारत में स्थापित करने में, मुग़ल शासक मुख्य रूप से हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ की मुख्य भूमिका रही । शुरुआती भारतीय कालीनों में फारसी अलंकरणों का प्रभाव दिखाई देता है, कुछ समय बाद मुग़ल उत्तराधिकारियों द्वारा फ़ारसी अलंकरणों के साथ भारतीय तत्वों का समावेश करके कालीनों की बुनाई की गयी, जिसे इंडो-इस्फ़हान या इंडो-पर्शियन कालीन कहा गया । धीरे-धीरे यहां के बुनकरों ने स्थानीय यथार्थवादी तत्वों का प्रयोग कर पूर्णरूप से भारतीय कालीनों का निर्माण किया । समय के साथ स्थानीय कार्यशालाओं को अंग्रेजी या यूरोपीय कंपनियों ने अपने अधीन कर लिया जिसके फलस्वरूप कालीनों की उच्च गुणवत्ता और अलंकरणों में परिवर्तन आया ।

इस प्रकार भारत के इतिहास में, कालीन की बुनाई एवं उनके अलंकरणों के विकास में मुग़ल शासकों की अहम भूमिका रही, जिसे इस लघु शोध पत्र में परिभाषित किया गया है ।

सन्दर्भ:

1. Maurizio Cohen, The World of Carpets.
2. E. Gans-Ruedin, Indian Carpets.
3. Kamla devi Chattopadhyaya, Carpets and floor coverings of india
4. Charles Jacobsen, Oriental rugs.
5. Charles Grant Ellis, Indian carpet in United States Museum, Marg, September 1965.
6. John Irwin- The Girdlers Carpets.
7. Asharani Mathur, Indian Carpets- A hand-Knotted Heritage.
8. Abigail S. Mcgowan, Readings on Textiles, June-September 2022, Volume 73 number 4.
9. Enza Milanesi, The Carpet, (An illustrated guide to the rugs and killims of the world).
10. K.K. Goswami, Advances in Carpet Manufacture (Woodhead Publishing in Textiles)
11. Cepc.co.in/products/design
12. https://www.kalracottageindustry.com/history-and-collection-of-carpets-in-india/
13. https://www.kalracottageindustry.com/mughals-and-their-passion-for-arts-and-rugs/
14. https://www.insignecarpets.com/blog/all/the-history-of-carpet
15. https://unesco.preslib.az/en/page/HnJIbef9wa